IJAER/Nov-Dec-2016/Volume-5/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

शाकुंतल की नाटकीयता

डॉ गोविंद राम चरोरा,

संस्कृत विभाग, महारानी श्री जया महाविद्यालय

भरतपुर, राज.

सार

महाकवि कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में शकुन्तला को एक आदर्श स्त्री के रूप में चित्रित किया है । शकुन्तला इस नाटक की नायिका है। वह ऋषि विश्वामित्र और मेनका की पुत्री है । मेनका को इन्द्र ने विश्वामित्र की तपस्या भंग करने के लिए भेजा था। मेनका ने उनका तप भंग किया और दोनों के सम्पर्क से शकुन्तला का जन्म हुआ। दोनों ने उसको छोड़ दिया । शकुन्तों नामक पक्षियों ने कुछ समय तक उसका पालन-पोषण किया, अतः उसका नाम शकुन्तला पड़ा। तत्पश्चात् ऋषि कण्व ने उसका पालन पोषण किया, इस प्रकार वे उसके धर्मपिता हुए ।

मुख्यशब्द: *शकुन्तला, अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक, दृश्य काव्य*

परिचय

संस्कृत साहित्य में दृश्य काव्य का विशेष महत्त्व है। दृश्य काव्य को रूपक, रूप और नाटक भी कहते हैं। संस्कृत नाट्य साहित्य में महाकवि कालिदास का अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक विशेष स्थान रखता है। कालिदास उज्जयिनी के निवासी थे और उन्होंने काली की कृपा से कवित्व शक्ति प्राप्त की थी । विद्वानों ने उनका काल प्रथम शताब्दी ई.पू. स्वीकार किया है। उन्होंने महाकाव्य, खण्डकाव्य और नाटक का प्रणयन किया। उनके नाटकों में अभिज्ञानशाकुन्तलम् आज भी पाठकों को अपनी ओर अकर्षित करने में पूर्णतः सक्षम है। जर्मन कवि गेटे ने इस नाटक की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। सात अंकों के इस नाटक में दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रणय, विवाह, विरह और पुनर्मिलन का महाकवि ने वर्णन किया है। इनके नाटक के अध्ययन के अभिज्ञानशाकुन्तलम् पश्चात् यह ज्ञात होता है कि घटना संयोजन में सौष्ठव, सार्थकता, रचना कौशल, ध्वन्यात्मकता, रस, अलंकार आदि के वर्णन में महाकवि ने दक्षता प्राप्त की है। कालिदास उपमा अलंकार के प्रयोग में सिद्धहस्त हैं। उनकी उपमायें अत्यन्त प्रसिद्ध हैं । कालिदास पात्रों के चरित्र-चित्रण में भी विशेष निपुण हैं । उनके पात्र सरल, सुशील, उदार और माननीय संवेदनाओं से युक्त हैं। इस प्रकार इस इकाई में आप महाकवि कालिदास का परिचय, अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का परिचय और अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं से परिचित होंगे।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक

इकाई के इस अंश में आप अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की कथावस्तु, उसके घटनाक्रम का समय तथा महाकवि कालिदास की नाट्यकला एवं शैली का अध्ययन करेंगे। हाकवि कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक संस्कृत साहित्य का ही नहीं अपितु विश्व साहित्य का सर्वोत्कृष्ट नाटक है। जर्मन विद्वान् गेटे ने इस नाटक की अभिज्ञानशाकुन्तलम् भूरि-भूरि प्रशंसा की है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का कथानक महाभारत के आदिपर्व में वर्णित 'शकुन्तलोपाख्यान' तथा पद्म पुराण के 'स्वर्गखण्ड' की कथा पर आधारित है। महाकवि कालिदास

के श्रृंगार रस प्रधान इस नाटक में सात अंक हैं। राजा दुष्यन्त इस नाटक के नायक, शकुन्तला नायिका तथा माढव्य विदूषक है। सात अंकों वाले इस नाटक में महाकवि ने दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रणय, विरह तथा पुनर्मिलन का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है। प्रिय विद्यार्थियों! इकाई के इस अंश में आप अंकानुसार अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की कथावस्तु का अध्ययन करेंगे ।

उद्देश्य

1. महाकवि कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में शकुन्तला को एक आदर्श स्त्री के रूप में चित्रित किया है ।
2. संस्कृत साहित्य में दृश्य काव्य का विशेष महत्त्व है।

प्रथम अंक

प्रथम अंक का प्रारम्भ नान्दी पाठ से होता है। नान्दी पाठ में महाकवि ने शिव की स्तुति की है । नान्दी पाठ के पश्चात् महाकवि कालिदास ने ग्रीष्म ऋतु का बड़ा ही रोचक वर्णन किया है। आश्रम के मृग का पीछा करते हुए राजा दुष्यन्त सारथि के साथ प्रवेश करते हैं। वह मृग को मारना ही चाहते हैं कि उसी समय तपस्वी का प्रवेश होता है और वह राजा दुष्यन्त से निवेदन करता है कि यह आश्रम का मृग है, इसे न मारिये । तपस्वी के निवेदन के पश्चात् राजा धनुष से प्रत्यंचा उतार लेते हैं, तपस्वी भी उनको चक्रवर्ती पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देकर उनसे प्रार्थना करता है कि आश्रम में जाकर अतिथि सत्कार स्वीकार करें। वह राजा को बताता है कि इस आश्रम के कुलपति कण्व सोमतीर्थ गए हैं। अतः अतिथि सत्कार का कार्य शकुन्तला कर रही है। राजा सारथि को बाहर छोडकर सामान्य वेष में आश्रम में प्रवेश करते हैं वहाँ वह वृक्षों में जल डालती हुई तीन अत्यन्त सुन्दर कन्याओं को देखता है। उन कन्याओं में एक शकुन्तला है । राजा उस पर आसक्त हो जाता है उसी समय शकुन्तला को एक भौंरा परेशान करने लगता है और वह उस भौंरे से रक्षा के लिए प्रार्थना करती है। उस समय राजा दुष्यन्त वृक्ष की ओट से बाहर आकर शकुन्तला की रक्षा करते हैं। वह शकुन्तला और उसकी सखियों से वार्तालाप करते हैं तभी उन्हें यह ज्ञात होता है कि शकुन्तला ऋषि विश्वामित्र और मेनका की पुत्री है तथा कण्व ऋषि की पालिता पुत्री है। शकुन्तला को क्षत्रिय कन्या जानकर दुष्यन्त उस पर आसक्त हो जाता है तथा उससे विवाह का विचार दृढ करता है । इसी बीच आश्रम में एक विक्षुब्ध हाथी प्रवेश करता है। राजा अपने सैनिकों को रोकने के लिए चला जाता है । शकुन्तला भी अपनी सखियों अनसूया और प्रियंवदा के साथ प्रस्थान करती है। इसी घटना के साथ अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का प्रथम अंक समाप्त हो जाता है।

द्वितीय अंक

नाटक के द्वितीय अंक में महाकवि कालिदास ने शकुन्तला पर आसक्त राजा दुष्यन्त की कामी अवस्था का वर्णन किया है । विदूषक राजा के समक्ष शिकार के विपक्ष में अपने विचार प्रकट करता है, तत्पश्चात् राजा शिकार खेलने का विचार छोड़ देते हैं और सेनापति को भी मना कर देते हैं । वह सैनिकों को आदेश देते हैं कि आश्रमवासियों को कोई दुःख न दें। राजा दुष्यन्त विदूषक को बताते हैं कि वह शकुन्तला पर आसक्त हैं और ऐसा कोई मार्ग बताओ जिससे आश्रम में कुछ समय रुका जा सके। उसी समय दो ऋषिकुमार प्रवेश करते हैं और राजा दुष्यन्त से

प्रार्थना करते हैं कि राक्षसों से यज्ञ की रक्षा करने के लिए वे कुछ समय आश्रम में रुक जायें। राजा ऋषिकुमारों का निवेदन स्वीकार करते हैं। उसी समय राजधानी से दूत का आगमन होता है और वह माता जी का सन्देश राजा को देता है। राजा अपनी जगह विदूषक को सेना सहित राजधानी भेज देते हैं। साथ ही विदूषक रानियों से " शकुन्तला के प्रति राजा की आसक्ति है" इस घटना को न बता दे, अतः राजा विदूषक

से कहता है कि शकुन्तला से प्रेम की सब बातें केवल मनोविनोदार्थ हैं वास्तविक नहीं। इसी घटना के साथ द्वितीय अंक समाप्त होता है ।

तृतीय अंक

नाटक के तृतीय अंक में महाकवि कालिदास ने दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रेम का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। शकुन्तला भी दुष्यन्त के प्रति आसक्त होने के कारण अस्वस्थ है। वह फूलों की शय्या पर लेटी है । उसी समय राजा भी आश्रम में प्रवेश करते हैं। वह पेड़ों की आड़ में छिपकर शकुन्तला और उसकी सखियों का वार्तालाप सुनते हैं। शकुन्तला अपनी सखियों को बताती है कि वह राजा दुष्यन्त पर आसक्त है और उनसे विवाह के बिना जीवित न रह सकेगी। उसी समय राजा सामने आकर शकुन्तला के प्रति अपना प्रणय निवेदित करते हैं। राजा और शकुन्तला को राजा शकुन्तला के समक्ष एकान्त में छोड़कर दोनों सखियाँ बाहर निकल जाती हैं। गान्धर्व विधि से विवाह करने का प्रस्ताव रखता है । उसी समय शान्ति जल लेकर गौतमी कुटिया में प्रवेश करती है। राजा वृक्ष की आड़ में छिप जाता है। गौतमी शकुन्तला को लेकर चली जाती है तथा राजा भी यज्ञ में राक्षसों के विघ्न को दूर करने के लिए प्रस्थान करता है। इसी घटना के साथ तृतीय अंक की समाप्ति होती है ।

चतुर्थ अंक

यह अंक इस नाटक का प्राण है। इस अंक में महाकवि कालिदास ने मानव एवं प्रकृति के मध्य पारस्परिक प्रेम और करुणा का सुन्दर निदर्शन किया है। शकुन्तला के साथ दुष्यन्त का गन्धर्व विवाह हो जाता है । वह शीघ्र ही शकुन्तला को ले जाने के लिए किसी योग्य व्यक्ति को भेजने का आश्वासन देकर तथा शकुन्तला को स्वनाम अंकित अँगूठी प्रदान करके अपनी राजधानी हस्तिनापुर चले जाते हैं । शकुन्तला राजा के ध्यान में मग्न होकर कुटी में बैठी है। उसी समय अतिथि के रूप में दुर्वासा ऋषि आश्रम में प्रवेश करते हैं। पति के ध्यान में मग्न शकुन्तला ऋषि का आतिथ्य नहीं कर पाती है परिणामस्वरूप ऋषि कुद्ध होकर शकुन्तला को शाप देते हैं कि 'जिसका स्मरण करती हुई तू मुझ आये हुए तपस्वी की ओर ध्यान नहीं दे रही है

प्रियंवदा ऋषि को प्रसन्न करने का प्रयास करती है तब दुर्वासा ऋषि बताते हैं कि अभिज्ञान का आभूषण दिखाने पर शाप का प्रभाव समाप्त हो जायेगा । इतना कहकर ऋषि दुर्वासा अन्तर्धान हो जाते हैं। प्रियंवदा और अनसूया यह निश्चय करती हैं कि शाप के इस वृत्तान्त को हम न तो शकुन्तला से कहेंगे और न ही किसी अन्य से । जाते समय राजा ने उसको स्वनाम अंकित अंगूठी पहनाई थी । वह अँगूठी शकुन्तला के पास है। अतः राजा शकुन्तला को पहचान लेगा और शाप का कोई प्रभाव नहीं होगा । यहाँ पर विष्कम्भक समाप्त होता है ।

ऋषि कण्व जब तीर्थयात्रा से लौटते हैं तब उन्हें अशरीरधारी तपोमयी वाणी द्वारा यह ज्ञात होता है कि शकुन्तला का दुष्यन्त से गान्ध्रव विवाह हुआ है और वह गर्भिणी है । यह जानकर ऋषि कण्व इस विवाह का समर्थन करते हैं। दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण राजा दुष्यन्त शकुन्तला को भूल जाता है और उसको हस्तिनापुर ले जाने के लिए किसी व्यक्ति को नहीं भेजता । शकुन्तला पूर्ण गर्भिणी है, अतः ऋषि उसे राजा के पास भेजने का सम्पूर्ण प्रबन्ध करते हैं । शकुन्तला की विदायी की तैयारी की जाती है। वन के वृक्षों ने शकुन्तला के लिए रेशमी वस्त्र, लाक्षारस तया आभूषण प्रदान किये हैं। सभी तपस्विनियाँ शकुन्तला को आशीर्वाद देती हैं। शकुन्तला अपनी सखियों, वन के वृक्षों और मृगों आदि से विदायी लेती है । शकुन्तला के वियोग में सभी दुःखी हैं विदायी के अवसर पर ऋषि कण्व शकुन्तला को उसके करणीय कर्तव्यों की शिक्षा देते हैं और राजा दुष्यन्त के लिए सन्देश भी देते हैं। ऋषि कण्य शकुन्तला को विदा करते हैं। शकुन्तला अपनी सखियों तथा वनज्योत्स्ना से भी विदा लेती है । शकुन्तला के साथ गौतमी और दो तपस्वी हस्तिनापुर जाते हैं ।

शकुन्तला को पति घर भेजकर ऋषि कण्व सन्तोष का अनुभव करते हैं। इसी के साथ चर्तुथ अंक की समाप्ति होती है ।

पंचम अंक

इस अंक में शकुन्तला को लेकर शाङ्र्गरव, शारद्वत और गौतमी राजद्वार में पहुंचते हैं। राजा दुष्यन्त के आदेशानुसार वे महल में प्रवेश करते हैं दुर्वासा के शाप के कारण राजा शकुन्तला से विवाह का समस्त वृत्तान्त भूल चुका है T पारस्परिक अभिनन्दन के पश्चात् शाङ्र्गरव राजा दुष्यन्त से निवेदन करता है कि आप दोनों के गान्धर्व विवाह को ऋषि कण्व ने स्वीकार किया है और शकुन्तला को आपके पास भेजा है। आप शकुन्तला को स्वीकार करें दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण राजा गान्धर्व विवाह के वृत्तान्त को सुनकर आश्चर्यचकित हो जाता है और शकुन्तला से विवाह की घटना को असत्य बताता है । इस पर गौतमी शकुन्तला का घूँघट हटा देती है किन्तु राजा उसको नहीं पहचानता है। शकुन्तला राजा द्वारा दी गई अंगूठी दिखाकर उसको विश्वास दिलाने का प्रयत्न करती है किन्तु वह अंगूठी रास्ते में शचीतीर्थ नदी की वन्दना करते समय उसके हाथ से गिर जाती है, अतः उसका यह प्रयास भी निरर्थक सिद्ध होता है। शाङ्र्गरव और राजा के मध्य आवेशपूर्ण वार्तालाप होता है किन्तु राजा शकुन्तला को स्वीकार करने से मना कर देता है । पुरोहित शकुन्तला को पुत्र जन्म तक अपने घर में रखने का प्रस्ताव देते हैं। शाङ्र्गरव, शारद्वत और गौतमी शकुन्तला को वहाँ छोड़कर चले जाते हैं। शकुन्तला स्वयं को कोसती है और रोती है । उसी समय एक अप्सरा (मेनका) आकर उसे उड़ा ले जाती है। यह सुनकर सभी आश्चर्यचकित रह जाते हैं। राजा खिन्न हृदय और चिन्तित है। इसी घटना के साथ पंचम अंक समाप्त होता है I

षष्ठ अंक

शचीतीर्थ की वन्दना के समय शकुन्तला के हाथ से जो अंगूठी नदी में गिर गई थी वह अंगूठी रोहू मछली के पेट से धीवर को मिलती है वह उस अंगूठी को बेचने के लिए बाजार जाता है । वहाँ बाजार में सिपाहियों ने उसे चोर समझकर पकड़ लिया और निर्णय के लिए राजा के पास ले गए। राजा धीवर को पुरस्कार देकर छोड़ देता है । राजा जब उस अंगूठी को देखता है तो दुर्वासा ऋषि के शाप का प्रभाव समाप्त हो जाता है और वह शकुन्तला के साथ गान्धर्व विवाह की समस्त घटना का स्मरण करता है शकुन्तला के स्मरण से राजा अत्यन्त दुःखी रहने लगता है। राजा वसन्तोत्सव न मनाने की आज्ञा देता है। मेनका की सखी सानुमती अदृश्य रूप में राजा के पास आकर उसकी अवस्था को देखती है राजा अपने मित्र विदूषक से वार्तालाप करता है और शकुन्तला के अधूरे चित्र को मँगाकर पूरा करने का प्रबन्ध करता है । तभी प्रतिहारी मन्त्री का एक पत्र लेकर आती है कि धनमित्र नामक व्यापारी नौका के टूट जाने से समुद्र में मर गया । उसकी कोई सन्तान नहीं है, अतः उसका समस्त धन राजकोष में जाएगा। यह सुनकर राजा अत्यन्त दुःखी होता है कि सन्तानहीन होने के कारण उसका समस्त धन भी दूसरे लोगों के पास चला जाएगा। यह सोचकर राजा मूर्च्छित हो जाता है। उसी समय इन्द्र के सारथि मातालि का आगमन होता है। वह देवराज इन्द्र का सन्देश राजा दुष्यन्त को सुनाता है कि दैत्यों के नाश के लिए इन्द्र ने आपको तुरन्त बुलाया है। राजा इन्द्र के रथ पर चढ़कर स्वर्ग के लिए प्रस्थान करता है ।

सप्तम अंक

राजा दुष्यन्त ने दानवों पर विजय प्राप्त की । इन्द्र ने दुष्यन्त का विशेष सत्कार किया और उन्हें विदा किया। स्वर्ग से लौटते समय राजा दुष्यन्त ने हेमकूट पर्वत पर मारीच ऋषि के आश्रम को देखा। वह ऋषि को प्रणाम करने के लिए रुक गए। राजा मारीच ऋषि से मिलने गए। आश्रम में राजा ने एक अद्भुत मेधावी बालक को देखा जो शेर के बच्चे के दाँत गिनने का प्रयत्न कर रहा था और उस शेर के बच्चे को खेल-खेल में तंग कर

रहा था। बालक की शारीरिक आकृति राजा से मिलती-जुलती थी, अतः राजा उस बालक को पुत्रवत् स्नेह प्रदान करने लगता है । बालक भी राजा का कहना मानने लगता है। बालक के साथ उपस्थित तपस्विनी से राजा को यह ज्ञात होता है कि इस बालक की माता का नाम शकुन्तला है और यह बालक पुरुवंशी है। इसके पिता ने इसकी माता को छोड़ दिया है। अपराजिता नाम की औषधि की घटना से यह निश्चित हो जाता है कि वह बालक राजा का पुत्र है उसी समय शकुन्तला राजा के समक्ष आती है और उसको प्रणाम करती है । राजा शकुन्तला के पैरों में गिरकर उसके प्रति किए गए अनुचित व्यवहार के लिए उससे क्षमा मँगता है। राजा और शकुन्तला मारीच ऋषि का दर्शन करने जाते हैं। वहाँ मारीच ऋषि बताते हैं कि दुर्वासा के शाप के कारण राजा ने शकुन्तला को नहीं पहचाना। अँगूठी देखते ही शाप की समाप्ति हो गई तथा उसे शकुन्तला की स्मृति हो गयी। ऋषि ने राजा को निर्दोष बताया तथा दोनों को आशीर्वाद देकर इन्द्र के रथ पर उन्हें उनकी राजधानी भेज दिया । वहाँ राजा और शकुन्तला सुखपूर्वक रहने लगे और भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त हो जाता है ।

शकुन्तला का चरित्र चित्रण

महाकवि कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में शकुन्तला को एक आदर्श स्त्री के रूप में चित्रित किया है । शकुन्तला इस नाटक की नायिका है। वह ऋषि विश्वामित्र और मेनका की पुत्री है । मेनका को इन्द्र ने विश्वामित्र की तपस्या भंग करने के लिए भेजा था। मेनका ने उनका तप भंग किया और दोनों के सम्पर्क से शकुन्तला का जन्म हुआ। दोनों ने उसको छोड़ दिया । शकुन्तों नामक पक्षियों ने कुछ समय तक उसका पालन-पोषण किया, अतः उसका नाम शकुन्तला पड़ा। तत्पश्चात् ऋषि कण्व ने उसका पालन पोषण किया, इस प्रकार वे उसके धर्मपिता हुए । शकुन्तला के चरित्र की कुछ विशेषतायें इस प्रकार हैं-

शारीरिक सौष्ठव

शकुन्तला लगभग 18 वर्ष की कन्या है। वह अत्यन्त सुन्दर है। उसका सौन्दर्य नैसर्गिक है। वह गौरवर्णी है। उसमें युवावस्था के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। उसके अंगों में असाधारण लावण्य है। उसके सौन्दर्य को देखकर राजा भी मन्त्रमुग्ध हो जाता है

निष्कर्ष

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की कथावस्तु, उसके घटनाक्रम का समय तथा महाकवि कालिदास की नाट्यकला एवं शैली का अध्ययन करेंगे। हाकवि कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक संस्कृत साहित्य का ही नहीं अपितु विश्व साहित्य का सर्वोत्कृष्ट नाटक है। जर्मन विद्वान् गेटे ने इस नाटक की अभिज्ञानशाकुन्तलम् भूरि-भूरि प्रशंसा की है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का कथानक महाभारत के आदिपर्व में वर्णित 'शकुन्तलोपाख्यान' तथा पद्म पुराण के 'स्वर्गखण्ड' की कथा पर आधारित है। महाकवि कालिदास के श्रृंगार रस प्रधान इस नाटक में सात अंक हैं। राजा दुष्यन्त इस नाटक के नायक, शकुन्तला नायिका तथा माढव्य विदूषक है। सात अंकों वाले इस नाटक में महाकवि ने दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रणय, विरह तथा पुनर्मिलन का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है। प्रिय विद्यार्थियों! इकाई के इस अंश में आप अंकानुसार अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की कथावस्तु का अध्ययन करेंगे । शकुन्तला राजा के समक्ष आती है और उसको प्रणाम करती है । राजा शकुन्तला के पैरों में गिरकर उसके प्रति किए गए अनुचित व्यवहार के लिए उससे क्षमा मँगता है। राजा और शकुन्तला मारीच ऋषि का दर्शन करने जाते हैं। वहाँ मारीच ऋषि बताते हैं कि दुर्वासा के शाप के कारण राजा ने शकुन्तला को नहीं पहचाना। अँगूठी देखते ही शाप की समाप्ति हो गई तथा उसे शकुन्तला की स्मृति हो गयी। ऋषि ने राजा को निर्दोष बताया तथा दोनों को आशीर्वाद देकर इन्द्र के रथ पर उन्हें उनकी राजधानी भेज दिया । वहाँ राजा और शकुन्तला सुखपूर्वक रहने लगे और भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त हो जाता है ।

संदर्भ

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय
2. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी दशरूपक, आचार्य धनन्जय
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास,
4. डॉ० उमाशङ्कर शर्मा जनसंख्या एवं पर्यावरणीय शिक्षा,
5. ओमप्रकाश श्रीवास्तव पर्यावरण और मानव मूल्यों के लिए शिक्षा,
6. बी०एल० शर्मा भारत में सामाजिक आन्दोलन, प्रो० एम० एल० गुप्ता पर्यावरण शिक्षा,
7. डॉ० आर०ए० शर्मा अभिज्ञानशाकुन्तलम्,
8. डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, 1 / 1 श्लोक अभिज्ञानशाकुन्तलम्,
9. डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी, 1 / 13 श्लोक अभिज्ञानशाकुन्तलम्, उमेशचन्द्र पाण्डेय, 2 अंक
10. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 3 / 24 श्लोक अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 4/5 श्लोक
11. अभिज्ञानशाकुन्तलम्. 4 / 9 श्लोक
12. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 4 / 11 श्लोक अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 5 / 12 श्लोक
13. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 5 / 17 श्लोक
14. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 6 / 3 श्लोक
15. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 6 / 17 श्लोक अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 7/7 श्लोक
16. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री, 7/12 श्लोक